• कविताएं...

## पराए हो गए...

*परदेस गए*
*पराए हो गए*
*यों सहमे खड़े हो*
*आओ, चले आओ!*
*देखो कुछ नहीं बदला*
*यह घर, ये दीवारें*
*तुलसी का चौरा*
*कोने में लटका घोंसले का*
*खंडहर,*
*अंदर अम्मां*
*सुमरिनी, खड़ाऊं फूल चढ़ी*
*वह कोना तुम्हारा*
*उसी तरह।*
*बाहर नीम तले भोलू चा वाला*
*रिक्शा स्टैंड वही टुटहा*
*मक्खियां बेखौफ पुरानेपन से।*
*हां, उस कोठरी में*
*खेलते थे लुकाछिपी*
*पिटे और लड़े*
*अब बंद है बचपन-*
*आओ खोलें!*
*अब छोड़ो भी*
*तुम्हीं कौन वही रह गए हो*
*चले ही आओ*
*मिलकर फाड़ते रहें*
*पुरानी चिट्ठियां*
*गीलापन बिना पोंछे हुए।*

**-देवेंद्र कुमार**

## तुम ही होते हो रिक्त

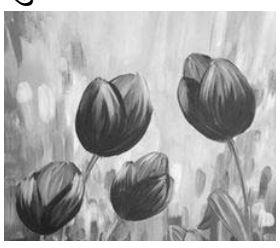

*उदासी हो*
*या प्रफुल्लता*
*तुम अपने को ही गवांते हो*
*दोनों स्थितियों में*
*तुम ही होते हो रिक्त*
*हर बार*
*और यदि नहीं जुड़े*
*दोनों से तुम*
*फिर जुड़ जाओगे*
*अपने अंदर के जगत से*
*बाहर से जुड़े तो*
*टूटोगे भीतर से*
*अपने से टूटे*
*तो विरह*
*जुड़ गए अपने से*
*तो योग*

**-दिनेश जुगरान**

• कहानी/-मुंशी प्रेम चंद...

# आहुति...

**गतांक से आगे...**

आनन्द फिर बोला-जिन महाशयों को परीक्षा का भूत सताया करता है, उन्हें देश का उद्धार करने की सूझती है। पूछिए, आप अपना उद्धार तो कर ही नहीं सकते, देश का क्या उद्धार कीजिएगा? इधर फेल होने से उधर के डण्डे फिर भी हलके हैं।

रूपमणि की आंखें आकाश की ओर थीं। छायाचित्र कठोर हो गया था।

आनन्द ने जैसे चौंककर कहा-हां, आज बड़ी मजेदार फिल्म है। चलती हो? पहले शो में लौट आएं।

रूपमणि ने जैसे आकाश से नीचे उतरकर कहा-नहीं, मेरा जी नहीं चाहता।

आनन्द ने धीरे से उसका हाथ पकडक़र कहा-तबीयत तो अच्छी है? रूपमणि ने हाथ छुड़ाने की चेष्टा न की। बोली-हां, तबीयत में हुआ क्या है?

तो चलती क्यों नहीं?

आज जी नहीं चाहता।

तो फिर मैं भी न जाऊंगा।

बहुत ही उत्तम, टिकट के रुपये कांग्रेस को दे दो।

यह तो टेढ़ी शर्त है; लेकिन मंजूर!

कल रसीद मुझे दिखा देना।

तुम्हें मुझ पर इतना विश्वास नहीं?

आनन्द होस्टल चला। जरा देर बाद रूपमणि स्वराज्य-भवन की ओर चली।

रूपमणि स्वराज्य-भवन पहुंची, तो स्वयंसेवकों का एक दल विलायती कपड़े के गोदामों को पिकेट करने जा रहा था। विशम्भर दल में न था।

दूसरा दल शराब की दुकानों पर जाने को तैयार खड़ा था। विशम्भर इसमें भी न था।

रूपमणि ने मन्त्री के पास आकर कहा-आप बता सकते हैं, विशम्भर नाथ कहां हैं?

मन्त्री ने पूछा-वही, जो आज भरती हुए हैं?

जी हां, वही।

बड़ा दिलेर आदमी है। देहातों को तैयार करने का काम लिया है। स्टेशन पहुंच गया होगा। सात बजे की गाड़ी से जा रहा है।

तो अभी स्टेशन पर होंगे।

मन्त्री ने घड़ी पर नजर डालकर जवाब दिया-हां, अभी तो शायद स्टेशन पर मिल जाएं।

रूपमणि ने बाहर निकलकर साइकिल तेज की। स्टेशन पर पहुंची, तो देखा, विशम्भर प्लेटफार्म पर खड़ा है।

रूपमणि को देखते ही लपककर उसके पास आया और बोला-तुम यहां कैसे आयी। आज आनन्द से तुम्हारी मुलाकात हुई थी?

रूपमणि ने उसे सिर से पांव तक देखकर कहा-यह तुमने क्या सूरत बना रखी है? क्या पांव में जूता पहनना भी देशद्रोह है?

विशम्भर ने डरते-डरते पूछा-आनन्द बाबू ने तुमसे कुछ कहा नहीं?

**विशम्भर-यह दोस्त की सलाह नहीं है रूपमणि! मुझे विश्वास है, तुम हृदय से यह नहीं कह रही हो। मेरे प्राणों का क्या मूल्य है, जरा यह सोचो। एमए होकर भी सौ रुपये की नौकरी।**

**बहुत बढ़ा तो तीन-चार सौ तक जाऊंगा। इसके बदले यहां क्या मिलेगा, जानती हो? सम्पूर्ण देश का स्वराज्य। इतने महान् हेतु के लिए मर जाना भी उस जिन्दगी से कहीं बढ़कर है। अब जाओ, गाड़ी आ रही है। आनन्द बाबू से कहना, मुझसे नाराज न हों...**

रूपमणि ने स्वर को कठोर बनाकर कहा-जी हां, कहा। तुम्हें यह क्या सूझी? दो साल से कम के लिए न जाओगे!

विशम्भर का मुंह गिर गया। बोला-जब यह जानती हो, तो क्या तुम्हारे पास मेरी हिम्मत बांधने के लिए दो शब्द नहीं हैं?

रूपमणि का हृदय मसोस उठा; मगर बाहरी उपेक्षा को न त्याग सकी। बोली-तुम मुझे दुश्मन समझते हो, या दोस्त।

विशम्भर ने आंखों में आंसू भरकर कहा-तुम ऐसा प्रश्न क्यों करती हो रूपमणि? इसका जवाब मेरे मुंह से न सुनकर भी क्या तुम नहीं समझ सकतीं?

रूपमणि-तो मैं कहती हूं, तुम मत जाओ।

विशम्भर-यह दोस्त की सलाह नहीं है रूपमणि! मुझे विश्वास है, तुम हृदय से यह नहीं कह रही हो। मेरे प्राणों का क्या मूल्य है, जरा यह सोचो। एमए होकर भी सौ रुपये की नौकरी। बहुत बढ़ा तो तीन-चार सौ तक जाऊंगा। इसके बदले यहां क्या मिलेगा, जानती हो? सम्पूर्ण देश का स्वराज्य। इतने महान् हेतु के लिए मर जाना भी उस जिन्दगी से कहीं बढ़कर है। अब जाओ, गाड़ी आ रही है। आनन्द बाबू से कहना, मुझसे नाराज न हों।

रूपमणि ने आज तक इस मन्दबुद्धि युवक पर दया की थी। इस समय उसकी श्रद्धा का पात्र बन गया। त्याग में हृदय को खींचने की जो शक्ति है, उसने रूपमणि को इतने वेग से खींचा कि परिस्थितियों का अन्तर मिट-सा गया। विशम्भर में जितने दोष थे, वे सभी अलंकार बन-बनकर चमक उठे। उसके हृदय की विशालता में वह किसी पक्षी की भांति उड़-उडक़र आश्रय खोजने लगी।

रूपमणि ने उसकी ओर आतुर नेत्रों से देखकर कहा-मुझे भी अपने साथ लेते चलो।

विशम्भर पर जैसे घड़ों का नशा चढ़ गया।

तुमको? आनन्द बाबू मुझे जिन्दा न छोड़ेंगे!

मैं आनन्द के हाथों बिकी नहीं हूं!

आनन्द तो तुम्हारे हाथों बिके हुए हैं?

रूपमणि ने विद्रोह भरी आंखों से उसकी ओर देखा, पर कुछ बोली नहीं। परिस्थितियां उसे इस समय बाधाओं-सी मालूम हो रही थीं। वह भी विशम्भर की भांति स्वच्छन्द क्यों न हुई? सम्पन्न मां-बाप की अकेली लडक़ी, भोग-विलास में पली हुई, इस समय अपने को कैदी समझ रही थी। उसकी आत्मा उन बन्धनों को तोड़ डालने के लिए जोर लगाने लगी।

गाड़ी आ गयी। मुसाफिर चढ़ने-उतरने लगे। रूपमणि ने सजल नेत्रों से कहा-तुम मुझे नहीं ले चलोगे?

विशम्भर ने दृढ़ता से कहा-नहीं।

क्यों?

मैं इसका जवाब नहीं देना चाहता!

क्या तुम समझते हो, मैं इतनी विलासासक्त हूं कि मैं देहात में रह नहीं सकती?

विशम्भर लज्जित हो गया। यह भी एक बड़ा कारण था, पर उसने इनकार किया-नहीं, यह बात नहीं।

फिर क्या बात है? क्या यह भय है, पिताजी मुझे त्याग देंगे?

अगर यह भय हो तो क्या वह विचार करने योग्य नहीं?

मैं उनकी तृण बराबर परवा नहीं करती।

विशम्भर ने देखा, रूपमणि के चांद-से मुख पर गर्वमय संकल्प का आभास था। वह उस संकल्प के सामने जैसे कांप उठा। बोला-मेरी यह याचना स्वीकार करो, रूपमणि, मैं तुमसे विनती करता हूं।

रूपमणि सोचती रही।

विशम्भर ने फिर कहा-मेरी खातिर तुम्हें यह विचार छोडऩा पड़ेगा।

रूपमणि ने सिर झुकाकर कहा-अगर तुम्हारा यह आदेश है, तो मैं मानूंगी विशम्भर! तुम दिल से समझते हो, मैं क्षणिक आवेश में आकर इस समय अपने भविष्य को गारत करने जा रही हूं। मैं तुम्हें दिखा दूंगी, यह मेरा क्षणिक आवेश नहीं है, दृढ़ संकल्प है। जाओ; मगर मेरी इतनी बात मानना कि कानून के पंजे में उसी वक्त आना, जब आत्माभिमान या सिद्धान्त पर चोट लगती हो। मैं ईश्वर से तुम्हारे लिए प्रार्थना करती रहूंगी।

गाड़ी ने सीटी दी। विशम्भर अन्दर जा बैठा। गाड़ी चली, रूपमणि मानो विश्व की सम्पत्ति अंचल में लिये खड़ी रही।

**-जारी**

• शायरी...

*दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे*
*वर्ना कहीं तक़दीर तमाशा न बना दे*
*ऐ देखने वालो मुझे हंस हंस के न देखो*
*तुम को भी मोहब्बत कहीं मुझ-सा न बना दे*

◆ ◆ ◆

*मैं ढूंढ़ रहा हूं मिरी वो शम्अ कहां है*
*जो बज़्म की हर चीज़ को परवाना बना दे*
*आख़िर कोई सूरत भी तो हो ख़ाना-ए-दिल की*
*काबा नहीं बनता है तो बुत-ख़ाना बना दे*
*बहज़ाद हर इक गाम पे इक सज्दा-ए-मस्ती*
*हर ज़र्रे को संग-ए-दर-ए-जानाना बना दे*

**-बेहज़ाद लखनवी**

◆ ◆ ◆

*घटा छाती, बहार आती, तुम्हारा तज़किरा होता*
*फिर उसके बाद गुल खिलते कि ज़ख्मे-दिल हरा होता*
*बुलाकर तुमने महफ़िल में हमको गैरों से उठवाया*
*हमीं खुद उठ गए होते, इशारा कर दिया होता*

**-नौशाद**

• आह हम हैं...

*आह हम हैं और शिकस्ता-पाइयां*
*अब कहाड़ वो बादिया-पैमाइयां*
*जोश-ए-तूफां है न मौंजों का ख़रोश*
*अब लिए है गोद में गहराइयां*
*खेलते थे ज़िंदगी ओ मौत से*
*वो शबाब और आह वो कजराइयां*
*हम हैं सन्नाटा है और महवियतें*
*रात है और रूह की गहराइयां*

**-जिगर, बरेलवी**